चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समय उजाला	26-8-24	2	1-4

ग्वार : बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट पर नियंत्रण जरूरी

हकृवि के विशेषज्ञों ने सुझाए फसल पैदावार बढ़ाने के उपाय

हिसार। ग्वार बारानी क्षेत्रों में खरीफ के मौसम में बोई जाने वाली एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है। ग्वार की फलियों को हरी बीन के रूप में खाया जा सकता है, हरे चारे के रूप मवेशियों को खिलाया जा सकता है। ग्वार दाने में गोंद अधिक होने के कारण इसका औद्योगिक महत्व अधिक है। इसे जून-जुलाई में बोया जाता है और अक्टूबर-नवंबर में काटा जाता है। समयानुसार यदि ग्वार की फसल में खरपतवार प्रबंधन, सिंचाई, कीट नियंत्रण व बीमारियों की रोकथाम की जाए तो फसल का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। हिसार स्थित चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि ग्वार की अधिक पैदावार लेने के लिए बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट नामक बीमारी का नियंत्रण किया जाना बहुत जरूरी है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि आमतौर पर मानसून की वर्षा पर बीजी गई फसल के लिए सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यदि फलियां बनते समय बिल्कुल वर्षा न हो तो एक हल्की सिंचाई अवश्य करें। कभी-कभी ग्वार की फसल पर तेला कीट का आक्रमण ज्यादा हो जाता है जिसकी रोकथाम करने के लिए 200 मि.ली. मैलाथियान 50 ई. सी. को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। यदि फसल के चारे के लिए उगाई गई हो तो छिडकाव के सात दिन तक यह फसल न खिलाएं। बिजाई के 50-60 दिन बाद ग्वार की फसल में बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट का प्रकोप बढ़ जाता है। इस बीमारी में पत्तों पर भूरे व काले रंग के जलसिक्त धब्बे बनते हैं। नमी के मौसम में ये धब्बे आपस में मिलकर बड़े आकार के हो जाते हैं। बाद में ये धब्बे तनों व फलियों पर भी दिखाई देते हैं।

ग्रसित पौधे सूख जाते हैं। इस बीमारी के नियंत्रण के लिए बीमारी की शुरुआत होने पर स्ट्रैप्टोसाइक्लिन (30 ग्राम प्रति एकड़) एवं कॉपर आक्सीक्लोराइड (400 ग्राम प्रति एकड़) को 200 लीटर पानी में मिलाकर 15-20 दिन के अन्तर पर दो छिड़काव अवश्य करें। संवाद

बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट की चपेट में फसल। संवाद

फलियों का रंग भूरा होने पर ही करें कटाई

चारा अनुभाग के सहायक शस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने बताया कि ग्वार की समय पर पकने वाली किस्म एचजी 365, एचजी 563, एचजी 2-20, एचजी 870 व एचजी 884 हैं। ग्वार की कटाई उचित समय पर करनी जरूरी है। जब फसल की पत्तियां पीली पड़कर झड़ने लगें और फलियों का रंग भूरा हो जाए तब फसल की कटाई करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	25-8-24	3	7-8

गाजर घास के कारण पशुओं में भी बीमारी के आने लगे लक्षण

हकृवि में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिक एवं कर्मचारी। • पीआरओ

जागरण संवाददाता • हिसार : चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के सहयोग से सस्य विज्ञान विभाग द्वारा गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। भिवानी जिले के गांव मिलकपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में लगभग 200 किसानों को गाजर घास के हानिकारक प्रभाव और उसके प्रबंधन विकल्पों के बारे में बताया। सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डा. एसके ठकराल ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता, कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में जानकारी दी। डा. वीरेंद्र हुड्डा ने बताया कि इस घास के कारण न केवल मनुष्यों में बल्कि पशुओं में भी बीमारी के लक्षण आने लगे हैं। गाजर घास के एक पौधे से लगभग 5000 से 20000 बीज पैदा होते हैं, जोकि जमीन में पुन: नमी पाकर अंकुरित हो जाते हैं। डा. पारस कांबोज ने इससे कंपोस्ट बनाने का तरीका बताया और इस खरपतवार की रोकथाम के सामूहिक उपाय बताए। इस अभियान में सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डा. एसके शर्मा, डा. प्रवीण कुमार, डा. नीलम, डा. कविता, डा. कौटिल्य, डा. आरएस दादरवाल, राजकुमार, सत्यनारायण और अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	25-8-24	3	3-5

कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिक एवं कर्मचारी।

हकृवि ने गाजर घास उन्नमूलन अभियान चलाया

हिसार, 24 अगस्त (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के सहयोग से सस्य विज्ञान विभाग द्वारा गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया।

इसके अंतर्गत भिवानी जिले के गांव मिलकपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में लगभग 200 किसानों को गाजर घास के हानिकारक प्रभाव और उसके प्रबंधन विकल्पों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता, कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि यह पौधा संभवत: देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है।

जब यह एक स्थान पर उग जाती है तो अपने आसपास किसी अन्य पौधे को उगने नहीं देती है, जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की संभावना पैदा हो गई है। उन्होंने इस घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	25-8-24	9	6-3

फसलों की बढ़वार के लिए गाजर घास का उन्मूलन जरूरी

हकृवि के कृषि वैज्ञानिक हिसार व भिवानी जिलों में चला रहे जागरूकता अभियान

हिसार (सच कहूँ न्यूज)।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के सहयोग से सस्य विज्ञान विभाग द्वारा गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत भिवानी जिले के गांव मिलकपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में लगभग 200 किसानों को गाजर घास के हानिकारक प्रभाव और उसके प्रबंधन विकल्पों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता, कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिक एवं कर्मचारी।

डॉ. ठकराल ने बताया कि खरपतवार से न केवल विभिन्न फसलों के उत्पादन में कमी आती है बल्कि इससे फसलों की लागत में भी काफी वृद्धि होती है। इनमें गाजर घास एक बहुत ही घातक खरपतवार है जोकि धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही है। अब इसका प्रकोप विभिन्न खाद्यान्न फसलों, सब्जियों एवं बागों में भी बढ़ रहा है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए हम सबको आगे आना होगा। हम सब मिलकर एक सामूहिक प्रयास से इसे नियंत्रित कर सकते हैं और प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचा सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	25.8.24	9	1-2

गाजर घास एक घातक खरपतवार सावधानी आवश्यक : डॉ. ठकराल

हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के सहयोग से सस्य विज्ञान विभाग द्वारा गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत भिवानी जिले के गांव मिलकपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में लगभग 200 किसानों को गाजर घास के हानिकारक प्रभाव और उसके प्रबंधन विकल्पों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता, कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में बताया। डॉ. ठकराल ने बताया कि खरपतवार से न केवल विभिन्न फसलों के उत्पादन में कमी आती है बल्कि इससे फसलों की लागत में भी काफी वृद्धि होती है। इनमें गाजर घास एक बहुत ही घातक खरपतवार है जोकि धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही है। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर की तरह की पत्तियों वाली एक वनस्पति काफी तेजी से बढऩे और फैलने लगती है। इसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने बताया कि गाजर घास खाली स्थानों, अनुपयोगी भूमियों,

35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैली गाजर घास : पूनियां

डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि यह पौधा संभवतः देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह एक स्थान पर उग जाती है तो अपने आसपास किसी अन्य पौधे को उगने नहीं देती है, जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की संभावना पैदा हो गई है। उन्होंने इस घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में बताया। इस अभियान में डॉ. वीरेंद्र हुड्डा, डॉ. पारस काम्बोज, डॉ. एसके शर्मा, डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. आरएस दादरवाल, राजकुमार, सत्यनारायण आदि मौजूद रहे।

औद्योगिक क्षेत्रों, सडक के किनारों, रेलवे लाइनों, शहरी एवं ग्रामीण निवास स्थानों पर अधिक पाया जाता है। अब इसका प्रकोप विभिन्न खाद्यान्न फसलों, सब्जियों एवं बागों में भी बढ़ रहा है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए हम सबको आगे आना होगा। हम सब मिलकर एक सामूहिक प्रयास से इसे नियंत्रित कर सकते हैं और प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचा सकते हैं।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	25.8.24	5	3-6

हकृवि ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

हिसार, 24 अगस्त (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के सहयोग से सस्य विज्ञान विभाग द्वारा गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत भिवानी जिले के गांव मिलकपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में लगभग 200 किसानों को गाजर घास के हानिकारक प्रभाव और उसके प्रबंधन विकल्पों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता, कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. ठकराल ने बताया कि खरपतवार से न केवल विभिन्न फसलों के उत्पादन में कमीं आती है बल्कि इससे फसलों की लागत में भी काफी वृद्धि होती है। इनमें गाजर घास एक बहुत ही घातक खरपतवार है जोकि धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही है। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर की तरह की पत्तियों वाली एक वनस्पति काफी तेजी से बढ़ने और फैलने लगती है। इसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने बताया कि गाजर घास खाली स्थानों, अनुपयोगी भूमियों, औद्योगिक क्षेत्रों, सड़क के किनारों, रेलवे लाइनों, शहरी एवं ग्रामीण निवास स्थानों पर अधिक पाया जाता है। अब इसका प्रकोप विभिन्न खाद्यान्न फसलों, सब्जियों एवं बागों में भी बढ़ रहा है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए हम सबको आगे आना होगा। हम सब मिलकर एक सामूहिक प्रयास से इसे नियंत्रित कर सकते हैं और प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचा सकते हैं। डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि यह पौधा संभवतः देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह एक स्थान पर उग जाती है तो अपने आसपास किसी अन्य पौधे को उगने नहीं देती है, जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की संभावना पैदा हो गई है।

कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिक व कर्मचारी।

हकृवि द्वारा भिवानी ज़िले के गांव मिल्कपुर व हिसार ज़िले के गांव पेटवाड़ में शिविर आयोजित

उन्होंने इस घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि एट्राजीन/मेट्रिब्यूजिन (0.5 प्रतिशत) व गलाइफॉसेट (1-1.5 प्रतिशत) का प्रयोग करके इस खरपतवार को नष्ट किया जा सकता है। डॉ. वीरेंद्र हुड्डा ने बताया कि इस घास के कारण ने केवल मनुष्यों में बल्कि पशुओं में भी बीमारी के लक्षण आने लगे हैं। गाजर घास के एक पौधे से लगभग 5000 से 20000 बीज पैदा होते हैं जोकि जमीन में पुनः नमी पाकर अंकुरित हो जाते हैं। डॉ. पारस कंबोज ने इससे कंपोस्ट बनाने का तरीका बताया तथा इस खरपतवार की रोकथाम के सामूहिक उपाय बताए। इस अभियान में सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. एसके शर्मा, डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. आरएस दादरवाल, राजकुमार, सत्यनारायण और अन्य कर्मचारी भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	25.8.24	4	3

हकृवि ने अभियान चलाया

हिसार| चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के सहयोग से सस्य विज्ञान विभाग द्वारा गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत भिवानी जिले के गांव मिलकपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कार्यक्रम में सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता, कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	24.08.2024	---	--

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्नमूलन अभियान चलाया गया

हकृवि द्वारा भिवानी जिले के गांव मिल्कपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में शिविर आयोजित

कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिक, कर्मचारी व अन्य ।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के सहयोग से सस्य विज्ञान विभाग द्वारा गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत भिवानी जिले के गांव मिलकपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में लगभग 200 किसानों को गाजर घास के हानिकारक प्रभाव और उसके प्रबंधन विकल्पों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता, कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. ठकराल ने बताया कि खरपतवार से न केवल विभिन्न फसलों के उत्पादन में कमी आती है बल्कि इससे फसलों की लागत में भी काफी वृद्धि होती है। इनमें गाजर घास एक बहुत ही घातक खरपतवार है जोकि धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही है। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर की तरह की पत्तियों वाली एक वनस्पति काफी तेजी से बढने और फैलने लगती है। इसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने बताया कि गाजर घास खाली स्थानों, अनुपयोगी भूमियों, औद्योगिक क्षेत्रों, सड़क के किनारों, रेलवे लाइनों, शहरी एवं ग्रामीण निवास स्थानों पर अधिक पाया जाता है। अब इसका प्रकोप विभिन्न खाद्यान्न फसलों, सब्जियों एवं बागों में भी बढ़ रहा है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए हम सबको आगे आना होगा। हम सब मिलकर एक सामूहिक प्रयास से इसे नियंत्रित कर सकते हैं और प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचा सकते हैं।

इस अभियान में सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. एसके शर्मा, डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. आरएस दादरवाल, राजकुमार, सत्यनारायण और अन्य कर्मचारी भी मौजूद रहे।

देश के 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका यह घास

डॉ. टोडरमल पूनिया ने बताया कि यह पौधा संभवत- देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह एक स्थान पर उग जाती है तो अपने आसपास किसी अन्य पौधे को उगने नहीं देती है, जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की संभावना पैदा हो गई है। उन्होंने इस घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि एट्राजीन/मेट्रिब्यूजिन (0.5 प्रतिशत) व ग्लाइफॉसेट (1-1.5 प्रतिशत) का प्रयोग करके इस खरपतवार को नष्ट किया जा सकता है।

डॉ. वीरेंद्र हुड्डा ने बताया कि इस घास के कारण ने केवल मनुष्यों में बल्कि पशुओं में भी बीमारी के लक्षण आने लगे हैं। गाजर घास के एक पौधे से लगभग 5000 से 20000 बीज पैदा होते हैं जोकि जमीन में पुन- नमी पाकर अंकुरित हो जाते हैं। डॉ. पारस कंबोज ने इससे कंपोस्ट बनाने का तरीका बताया तथा इस खरपतवार की रोकथाम के सामूहिक उपाय बताए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	24.08.2024	---	--

हकृवि ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्नमूलन अभियान चलाया

- हकृवि द्वारा भिवानी जिले के गांव मिल्कपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में शिविर आयोजित

कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिक एवं कर्मचारी।

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 24 अगस्त : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के सहयोग से सस्य विज्ञान विभाग द्वारा गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया।

इसके अतर्गत भिवानी जिले के गांव मिलकपुर व हिसार जिले के गांव पेटवाड़ में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में लगभग 200 किसानों को गाजर घास के हानिकारक प्रभाव और उसके प्रबंधन विकल्पों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता, कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. ठकराल ने बताया कि खरपतवार से न केवल विभिन्न फसलों के उत्पादन में कमी आती है बल्कि इससे फसलों की लागत में भी काफी वृद्धि होती है। इनमें गाजर घास एक बहुत ही घातक खरपतवार है जोकि धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही है। डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि यह पौधा संभवतः देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह एक स्थान पर उग जाती है तो अपने आसपास किसी अन्य पौधे को उगने नहीं देती है, जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की संभावना पैदा हो गई है। इस अभियान में सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. एसके शर्मा, डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. आरएस दादरवाल, राजकुमार, सत्यनारायण और अन्य कर्मचारी भी मौजूद रहे।